राग यमन—ताल धमार

माई होरी खेले कान्ह कुंजनिमें झुंडनिमें या गोकुलके ग्वेंडे।
ढीठ लबार कह्यो नहिं मानत वह पहेयों हे सबनिके पेंडे।
कंचनकी पिचकाई कर लिए खेलत अपने एंडे।
'कृष्णजीवन लछिराम' के प्रभु पिय तोरत लाजकी मेंडे।

स्थायी

०	३	×	२
नि प प	रे — म॑ म॑	प — — म॑ ग	ग रे
मा ई —	हो — री —	खे — — ले —	का —
रे ग रे	नि़ रे सा —	ग सा — नि़ ध़	प़ —
न्ह — कुं	ज नि में —	झुं ड — नि —	में —
प़ सा ध़	सा — रे रे	प रे — नि़ रे	सा —
या — —	गो — कु ल	के — — ग्वें —	डे —

अन्तरा

×	२	०	३
प — प सां सां	नि ध	सां — सां	सां रें सां सां
ढी — ठ — ल	बा —	र — क	ह्यो — न हिं
नि रें — गं रें	सां —	नि ध नि	ध प म॑ ग
मा — — न —	त —	व ह —	प यों — हे
म॑			
प प — म॑ ग	ग प	रे — सा	नि धप म॑ गम॑
स ब — नि —	के —	पें — डे	मा ई— हो री—

राग खमाज–संक्षिप्त विवरण

(१) थाट : खमाज से खमाज राग उत्पन्न होता है। (२) जाति षाडव सम्पूर्ण है, क्योंकि इसके आरोहमें ऋषभ स्वर वर्ज्य किया जाता है। (३) स्वर–अवरोहमें नि कोमल और बाकी के शुद्ध लगते है। (४) वादी गान्धार है, और संवादी स्वर निषाद है। (५) समय रात्रि का दूसरा प्रहर है। (६) विशेष यह राग का वैचित्र्य ग, मप, नि स्वरों पर है। इन स्वरों पर अनेक तानें लाकर समाप्त की जाती है।

सम्प्रदाय में खमाज राग के पद बहुत कम प्राप्त होते हैं। केवल ब्याह, सांझी, हिंडोला इत्यादि कुछ त्यौहारो के अतिरिक्त नित्य ऋतुक्रम की प्रणाली में यह राग गाया नहीं जाता। संभव है कि ठुमरी अंगका यह राग होने से अष्टछाप आदि महानुभावोंने इस राग का उपयोग न किया हो। श्रीहरिरायजी के समय के पूर्व यह राग गाने की परम्परा दिखाई नहीं देती।

(७) **पकड स्वर** :– निध, मप, ध, मग.

(८) **आरोहावरोह** :– सा, गम, प, धनिसां। सांनिधप, मग, रेसा।

राग खमाज–ताल त्रिताल

माई मेरो लाल बनावनि आयो।
रतनजटित को सीस सहेरो, हीरामोती लाल जरायो ॥१॥
नंदरायको कुंवर लाडिलो जसुमति गोद खिलायो।
"पुरुषोत्तम" प्रभुकी छबि निरखत, रोम–रोम सचुपायो ॥२॥

स्थायी

२	०	३	×
धनि पध नि सां	नि धप म ग	ग म प ध	नि – सां –
मा– ई– मे रो	ला –– ल ब	ना – ब नि	आ – यो –

अन्तरा

२ ० ३ ×

ग म नि ध | नि नि सां – | – नि – सां | सांरें निसां नि ध

र त न ज | टी त को – | – शी – श | स– हे– रो –

सां गं गं मं | रें गं नि सां | निध पध नि सां | धनि पध नि सां

ही रा मो ती | ला – ल ज | रा– –– यो – | मा– –ई मे रो

संचारी

२ ० ३ ×

ग म नि ध | सां नि सां – | नि नि सां सां | – नि धप ध

नं – द रा | – य को – | कुं व र ला | – डि लो– –

प ध म ग | ग म प धनि – – – | सां – – –
ज सु म ति | गो – द खिला – – – | यो – – –

राग खमाज—ताल चौताल

गायो न गोपाल मन लायो न रसाल लीला
सुनी न सुबोधिनी न साधुसंग पायो हे ।
सेव्यो नहिं स्वाद करी घरी आधि घरी हरि
कबहुँ न कृष्ण-नाम रसना रटायो हे ॥१॥
श्रीवल्लभ विठ्ठलेश प्रभुकी सरन जाइ
दिन होइ भतिहीन सीस न नमायो हे ।
'रसिक' कहे बार-बार लाजहू न आवै तोहि
मनुस-जन्म पाइ मूढ कहा तू कमायो हे ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	सां	नि	सां	–	सां	नि	सां	नि	धप	ध	म
गा	–	यो	न	–	गो	पा	–	ल	म–	–	न
ग	–	म	प	सां	नि	ध	–	म	ग	–	ग
ला	–	यो	न	–	र	सा	–	ल	ली	–	ला
ग	नि	सा	ग	–	म	प	–	ध	ग	–	म
सु	नी	–	न	–	सु	बो	–	धि	नी	–	न
सां	–	नि	ध	–	म	प	–	ध	म	–	ग
सा	–	धु	सं	–	ग	पा	–	यो	हे	–	–

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	नि	ध	नि	सां	–	नि	सां	–	सां
से	–	व्यो	न	–	हिं	स्वा	–	द	क	–	रि
नि	नि	–	सां	–	सां	सां	नि	सां	नि	–	ध
ध	री	–	आ	–	धि	ध	री	–	ह	–	रि
ध	म	म	प	–	ध	नि	सां	नि	सां	–	सां
क	ब	–	हु	–	न	कृ	–	ष्ण	ना	–	म
सां	रें	नि	ध	–	म	प	–	ध	म	–	ग
र	स	–	ना	–	र	टा	–	यो	हे	–	–

संचारी

×		०		२		०		३		४	
ध	—	ध	ध	प	ध	नि	—	सां	नि	—	ध
श्री	—	व	ल्ल	—	भ	बि	—	ठ	ले	—	श
ध	ग	म	प	सां	नि	ध	—	ग	म	—	ग
प्र	भु	—	की	—	स	र	—	न	जा	—	इ
ग	नि़	सा	ग	—	म	प	प	—	ध		ग म
दी	—	न	हो	—	य	म	ति	—	ही	—	न
नि	—	नि	ध	—	म	प	ध	म	ग	रे	सा
सी	—	स	न	—	न	मा	—	यो	हे	—	—

आभोग

×		०		२		०		३		४	
म	ग	म	नि	ध	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
र	सि	क	क	हे	—	बा	र	र	बा	—	र
प	नि	नि	सां	—	सां	नि	सां	सां	नि	—	ध
ला	—	ज	हू	—	न	आ	—	वे	तो	—	हि
ध	ग	म	प	—	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
म	नु	स	ज	—	न्म	पा	—	यो	मू	—	ढ
रें	नि	—	ध	—	म	प	—	ध	म	—	ग
क	—	हा	तू	—	क	मा	—	यो	हे	—	—

नि	ध	—	प	—	ग	प	ग	रे	ग	प	—	ध	—
झु	—	—	ल	—	त	—	है	—	—	गि	—	रि	—
सां	सां	—	सां	—	—	नि	ध	प	—	ध	—	रें	—
ध	र	—	न	—	—	झु	ला	—	—	व	—	त	—
सां	—	—	नि	ध	नि	ध	प	—	—	ग	—	प	—
वा	—	—	ला	—	—	—	डो	—	—	—	—	ल	—

अन्तरा

×					२		०			३			
प	ग	—	प	—	ध	प	सां	सां	—	सां	—	सां	—
निं	र	—	ख	—	—	नि	र	ख	—	फू	—	ल	—
नि	ध	—	सां	—	रें	—	सां	—	—	ध	—	प	—
त	—	—	ल	—	लि	—	ता	—	—	दि	—	क	—
सा	रे	—	ग	—	रे	—	सां	नि	ध	प	—	ध	रें
रा	—	—	धा	—	—	—	व	र	—	नं	—	द	—
सां	—	—	नि	ध	नि	ध	प	—	—	ग	—	प	—
ला	—	—	ला	—	—	—	डो	—	—	—	—	ल	—

राग कल्याण—ताल धमार

कही न परे हो कान्ह कुंवर की सुंदराई।
कोटिमदन नखजोति विलोकत परसत नवइंदुकिरन की जुन्हाई।।१।।

कंकणवलय हार—गजमोती देखियत अंग अंग में वह झांई।
सुघर सुजान स्वरूप सुलक्षण "गोविंद"प्रभु सब बिध सुंदरताई ।।२।।

स्थायी

										ग	रे	सा	रे
										क	ही	न	प
×					२		०			३			
प	—	ग	प	—	ध	प	ग	रे	सा	म॑	ग	प	प
रे	—	—	—	—	—	—	हो	—	—	का	—	न्ह	कुं
ध	ध	—	नि	ध	प	प	रे	—	सा	ग	रे	सा	रे
व	र	—	की	—	सुं	द	रा	—	ई	क	ही	न	प

अंतरा

×					२		०			३			
प	ग	—	प	—	ध	प	सां	सां	—	सां	—	सां	—
को	—	—	टि	—	म	—	द	न	—	न	—	ख	—
नि	ध	—	सां	—	रें	—	गं	रें	—	सां	—	सां	—
जो	—	—	ति	—	व	—	लो	—	—	क	—	त	—
नि	ध	—	प	प	म॑	ग	प	—	—	ग	—	प	ध
प	र	—	स	त	न	व	ई	—	—	न्दु	—	कि	—
नि	ध	—	प	ग	ग	—	रे	—	सा	ग	रे	सा	रे
र	न	—	की	—	जु	—	न्हा	—	ई	क	ही	न	प

राग कल्याण—ताल चौताल

मेरे तो कान्ह हे री प्रान सखी आन ध्यान
नाहिं मेरे मनके हरन सुखके करन ।।१।।
लटपटी पचरंग पाग ढरकि रही वाम भाग
कुंभकुम को तिलक माल नेनकमल स्याम बरन ।।२।।

भुकुटि कुटिल लोल कपोल रत्नजटित कुंडल डोल
मानों ससि प्रगट भयो उदय किये जुगल तरनि ॥३॥
प्रभु 'कल्यान' गिरिधरकी सोभा निरखि विथकित भई
मोहि लई माई मुरली अधर मधुर धरनि ॥४॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	प	ग	प	ध	प	प	रे	सा	—
का	—	न्ह	हे	—	री	प्रा	—	न	स	खी	—
नि़	ध़	प़	ग	ग	प	ध	प	ग	रे	ग	पध
आ	—	न	ध्या	न	ना	हि	—	मे	रे	सु	ख—
सां	सां	ध	प	ग	प	रे	सा	—	प	ग	म̍
क	र	न	दु	ख	ह	र	न	—	मे	रे	तो

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	ग	प	प	ध	प	सां	—	सां	सां	रें	सां
ल	ट	प	टी	प	च	रं	—	ग	पा	—	ग
ध	निध	सां	रें	गं	—	पं	रें	गं	रें	सां	सां
ढ	र—	कि	र	ही	—	वा	—	म	भा	—	ग
गं	रें	सां	सां	ध	प	नि	ध	नि	ध	प	प
कुं	—	कु	म	को	—	ति	ल	क	भा	—	ल
सां	—	ध	प	म̍	ग	प	रे	ग	रे	ग	रे
ने	—	न	क	म	ल	स्या	—	म	ब	र	न

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	प	ध	प	नि	ध	प	प	—	प
भ्रु	कु	टी	कु	टि	ल	लो	ल	क	पो	—	ल
म॑	ग	प	प	ध	ध	सां	सां	ध	प	—	प
र	—	त्न	ज	टि	त	कुं	ड	ल	डो	—	ल
ध	—	प	—	ग	रे	प	प	ग	रे	सा	—
मा	—	नों	—	स	सि	प्र	ग	ट	भ	यो	—
नि़	ध़	सा	रे	ग	—	प	रे	ग	रे	सा	सा
उ	द	य	कि	ये	—	जु	ग	ल	त	र	नि

राग श्याम कल्याण-संक्षिप्त विवरण

श्याम कल्याण कल्याणी थाट का राग हैं। इस राग के सम्बन्ध में कुछ मतभेद भी दिखाई देता है। आजकल जो श्याम कल्याण का स्वरूप प्रचार में दृष्टिगत होता हैं इस में कल्याण का अंग कहीं और कितना प्रमाण में है? वह मार्मिकों अच्छी तरह से समझ सकते हैं क्योंकि अधिकतर केदार और कामोद का संग हीं प्रदर्शित होता हैं। कहीं—कहीं मर की मींड में सोरठ की झांखी होती है। केदार के वादी संवादी इस में संबादीवादी बन जाते हैं। कामोद का पंच भी महत्त्वपूर्ण रहता है तथा ऋषभ गाधार का स्पष्ट प्रयोग इत्यादि से कल्याण थाट या शंकराभरण थाट कहना मुश्किल होता है। केवल आरोह में पंचम लेते समय तीव्र का प्रयोग करने से कल्याण थाठ कहना समझ में नहीं आता। ग्रन्थों में शाम, साम, सोम तथा श्याम कल्याणी राग नामों से उल्लेख प्राप्त होते हैं। साम (श्याम) राग को 'चतुर्दण्डि

प्रकाशिका' ग्रन्थ में शंकरामरण थाट का कहा हैं। (अतः * प्रचार के श्याम—कल्याण को शाम या साम कहना सुरांगत होगा।

परन्तु जो श्याम कल्याण को कल्याणी थाट का मानते हैं वह इस श्याम से भिन्न होने का कुछ लोग मानते थे। अतः प्रचार के केदार कामोद अंग के इस राग को शाम कहना उचित समझते थे और 'शाम कल्याण' को आज का 'यमन कल्याण' हीं मानते थे। यमन राग मे शुद्ध मध्यम का क्वचित् प्रयोग करने से 'यमन कल्याण' होने की प्रथा कहां तक प्राचीन है यह हम निश्चित रूप से कह नहीं सकसे। यमन स्वयं 'कल्याण' ही हैं, ऐसी मान्यता वाले कुछ लोग यमन को कल्याण भी कहते है। जैसे वृंदावनी सारंग को केवल 'सारंग' नाम से कहने की प्रथा हाल भी प्रचार में है। इस प्रकार यमन या 'यमन कल्याण' एक ही राग मान कर यमन में क्वचित् शुद्ध मध्यम का प्रयोग वाला राग शाम कल्याण बनाते थे। इस मान्यता को 'हवेली—संगीत'-परम्परा का समर्थन प्राप्त होता है।

पं. भातखण्डेजी जिनकी पास सितार सीखे थे उन वल्लभदासजी भाटिया के गुरु गो. श्री १०८ जीवनलालजी महाराज के सम्पर्क में आये हुए और उनके मन्दिर मे जिन्होंने वर्षों तक वैष्णव नाते से कीर्तन की सेवा की थी वह श्रीविठ्ठलदासजी शाह (पाटन वाले) उन से हिंडोरा का एक पद मैने सुना था वह शाम कल्याण का दुपद था।

किन्तु इस पद की बन्दिश ख्याल में न होने से यहाँ आधुनिक प्रचार के अनुसार दिया गया है।

---

* "शंकराभरणान्मेलात्संभूतस्सामरागकः ।
संपूर्णः सततं गेयो मन्द्रमध्यमभूषितः ॥

राग श्याम कल्याण, ताल चर्चरी

हिंडोरे झूलत स्यामा स्याम ।
गरजत घन चलत पवन सननन सननन सनननन ।
सब गोपियन के मध्य बिराजत, लेत तान तननन तननन तनननन ।।१।।
बाजत ताल मृदंग बांसुरी उठत घोर घननन घननन घनननन ।
''आनंदघन''प्यारे मुख ऊपर उडत भंवर भननन भननन भनननन ।।

स्थायी

×		२			०		३		
म	रे	ऩि	ऩि	सा	रे	म॑	प	—	प
झू	ल	त	—	स्या	मा	—	स्या	—	म
प	नि	ध	म॑	प	म	रे	सा	रे	सा
ग	र	ज	—	त	घ	न	च	ल	त
ध	निप	ऩि	सा	रे	म॑	रे	म॑	प	रें
प	व—	न	—	स	न	न	न	स	न
नि	ध	प	म॑	प	म	रे	सारे	ऩि	सा
न	न	स	न	न	न	न	हिं—	डो	रे

अन्तरा

×		२			०		३		
प	प	सां	—	सां	सां	सां	सां	रें	सां
स	ब	गो	—	पि	य	न	के	—	—
ध	निध	सां	—	रें	सां	—	ध	नि	प
म	——	ध्य	—	बि	रा	—	ज	—	त

म॑	म॑	प	प	नि	ध	प	म॑	प	रें
ले	त	ता	न	त	न	न	न	त	न
नि	ध	प	म॑	प	म	रे	सारे	नि़	सा
न	न	त	न	न	न	न	हिं-	डो	रे

राग केदार–संक्षिप्त विवरण

राग केदार प्राचीन एवं सुप्रसिद्ध हैं। शास्त्रग्रन्थों में यह राग कल्याण थाट का माना गया हैं। आजकल प्रचार में तीव्र मध्यम का प्रयोग दृष्टिगत होता हैं। इस राग में गान्धार और निषाद का कोमलत्व न होने से तीव्र मध्यम का प्रयोग सुसंगत दिखाई देता हैं। प्रचार में कुछ गायक लोग दोनों मध्यमों को एक के बाद दूसरा लेकर जोड देते हैं। यह कृत्य भले ही प्रिय.लगता हो, परन्तु हमारे मतानुसार प्राचीन नहीं है। हमारी अष्टछाप की गायन शैली में ऐसा प्रयोग वृद्ध कीर्तनकारों से मैंने सुना नहीं है। तीव्र मध्यम केवल आरोह में ही लिया जाता है। यह स्वर इस राग में नियमित नहीं हैं। किन्तु आगन्तुक जैसा माना जाता है। इस राग में गान्धार स्वर वर्ज्य नहीं है तथापि अधिकतर गौण होने से विद्वान लोग उसको असत्प्राय ही मानते हैं। मध्यम से ऋषभ पर आते समय गान्धार स्वर इस प्रकार लपेटा हुआ रहता है कि मध्यम स्वर प्रधान स्वर होने से स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देता। इस राग में षड्ज से मध्यम पर जाते समय 'रे ग' स्वर का प्रयोग किया नहीं जाता, क्योंकि 'रेमप' लेने से सारंग और मल्हार तथा 'रेप' लेने से कामोद का अंग उत्पन्न होता है।

''हृदयप्रकाश'' ग्रन्थ में केदार राग का थाट शंकराभरण माना

गया है। तथा 'संगीतपारिजात के कर्ता अहोबल पण्डित ने भी शंकराभरण ही माना है।

रागकल्पद्रुम में इस राग का थाट बिलावल दिखाई देता है'। इस राग की प्रकृति गंभीर है। मध्यम स्वर पर कहीं कहीं गान्धार स्वर का कण उचित माना गया है।

पुण्डरीक विट्ठल ने केदार मेल का वर्णन इस प्रकार कहा है।

"लघ्वादिकी षड्जकमध्यमौजल:,। शुद्धौ समौ पंचमको विशुद्ध:।
निगौ विशुद्धौ च यदाभवन्ति तदा तु केदारकमेल उक्त।"

अर्थात्: जिस मेल में षड्ज, मध्यम लघु, यानि शुद्ध और पंचम विशुद्ध है। इस को केदार मेल कहा जाता है। अतः प्राचीन मान्यतानुसार बिलावल थाट मानना उचित कहा जायेगा।

हवेलीसंगीत प्रणाली में यह राग प्राय: उष्ण काल में शयन के समय गाया जाता है। इस समय के अधिकतर कुंज के भाव के तथा रास के भाव के सुन्दर पद प्राप्त होते हैं।

आरोह–अवरोह : साम, मप, ध प, नि ध, सां,। सां, निध, प म प धप, म, गम, रेसा।

पकड : सा, म, मप, ध प म, प म, रे सा।

थाट कल्याण : जाति सम्पूर्ण

समय : रात्रि का प्रथम प्रहर,

स्वरविस्तार : वादी मध्यम संवादी षडज

---

* "गनी तीव्रौ तु केदार्यां रिस्तैन स्तोऽध गादिमा"

卐 "मध्य मांश ग्रहन्यासो धैवतो वर्जित: क्वचित्।
अवश-युत्तर त्रानं केदारत्य मतं बुधै: ॥"

साम, पम, पधपम, धपम, सामपधपम, पम, रे सा, सारेसा ।

सा, रेसा, म, रेसा, प, म, रेसा, ध, प, म, रेसा, सांनिध, प, म॑पध; प, म, रेसा, ममरेसा । निधप मपधप, ममरेसा ।

पपसां, सां, सांरेंसां, मं रेंसां, सां ध, सां, रेंसां निधप, प, ग म, रेंसां, रेंसां, निध, प, म॑पनिध, प, म॑पधपम, म, रेसां रेसां, निधप, पधपम साम, पधम, पम, ग, रे, सा सारेसा ।

राग केदार–ताल त्रिताल

कदंब बन बीथन करत बिहार ।
अति रसभरे मदन मोहन पिय तोर्यों प्रिया उर हार ॥१॥
कनकभूमि बिखरे गजमोती, कुंजकुटी के द्वार ।
'गोविंद'प्रभु श्रीहस्त कर, पोवत, सुंदर ब्रजराजकुमार ॥२॥

स्थायी

३				×				२				०			
म॑	प	ध	प	म	–	म	मग	प	मप	ध	प	म	रे	सा	प
दं	ब	ब	न	बी	–	थ	न–	क	र	त	बि	हा	–	र,	क
म॑	प	ध	प	धनि	सां	ध	प	म॑	प	ध	प	म	रे	सा	प
दं	ब	ब	न	बी–	–	ध	न	क	र	त	बि	हा	–	र,	–

अन्तरा

×				२				०				३			
म	मग	प	धप	सां	सां	–	सां	प	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प
अ	ति–	र	स–	भ	रे	–	म	द	न	मो	–	ह	न	पि	य

सां गंमं रें सां | ध नि सां रें | सांनि धनि धप प | मं प ध प
तो —— यों पि | या — उ र | हा— —— र— क | दं ब ब न

संचारी

× २ ० ३
म मग प प | ध ध प प | धनि सां ध प | मंप धप म —
क न— क भू | — मि वि ख | रे— ग ज | मो— — ती —
प मं ध प | म रे सा — | सा मम प मध | ध प म —
कुं — ज कु | टी — के — | द्वा — — — | — — र —

आभोग

× २ ० ३
प पम ध प | सां — सां सां | ध नि सां रें | सां नि ध प
गो विं- द प्र | भु — श्री ह | — स्त क र | पो — ष त
मं रें सां सांनि | ध नि सां रें | सांनि ध प प | मं प ध प
सुं द र ब्रज | रा — ज कुं | व— — र क | दं ब ब न

राग केदार—ताल चर्चरी

राधिका आज आनंदमें डोलें ।
सांवरे चंद गोविंदके रसभरी, दूसरी कोकिला मधुर सुर बोलें ॥१॥
पहरें तन नील पट कनकहारावली, हाथ ले आरसी रूपकों तोलें ।
कहत 'श्रीभट्ट' व्रजनार नागर बनी,कृष्णके सीलकी ग्रंथिका खोलें ॥२॥

ध	प	म	रे	—	सा	सा	—	म	मग	प	प
म	न	—	मो	—	ह	सां	—	व	(रे—)	—	स
ध	प	नि	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प	म॑	प
लो	—	—	नै	—	क	न्हा	—	—	ई	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	सां	—	सां	सां	—	—	सां	रें	सां
मु	—	—	ख	—	सो	हे	—	—	जे	—	से
सां	ध	—	सां	—	रें	सां	—	नि	ध	नि	प
दू	—	—	ज	—	को	चं	—	—	दा	—	—
म	—	प	सां	—	गं	गं	मं	रें	सां	—	रें
छि	—	प	छि	—	प	दे	—	—	त	—	दि
सां	नि	ध	प	म॑	प	म	ध	प	मग	प	प
खा	—	—	ई	—	—	—	ब,	न	(ठ—)	—	न

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	प	ध	—	—	प	—	प
च	ले	—	ही	—	जा	उ	—	—	ने	—	क
म	—	—	प	—	नि	ध	प	ध	प	म	—
ठा	—	—	हे	—	र	हो	—	गे	—	—	—
म	म	—	म॑प	ध	प	म	—	—	रे	—	सा
क	न	—	सो	—	त	न	—	—	ए	—	सी

सां	—	—	म	—	प	ध	प	म	रे	—	सा
सी	—	—	ख	—	सि	खा	—	—	ई	—	—

राग केदार–ताल चौताल

अद्‌भुत नटभेख धरें जमुनातट स्यामसुंदर,
गुननिधान गिरिबरधर रास रंग नाचें ।
जुवतिजूथ संग मिलि गावत केदारो राग,
अधर वेनु मधुर मधुर सप्त सुरन सांचें ॥१॥
उरप तिरप लाग डाट ततथेई ततथेई थेई थेई,
उघटत सव्दावलि गति भेद कोउ न बांचें ।
'चत्रभुज'प्रभु वनविलास मोहे सब सुर अकास,
सघन चंद विथक्यो रथ पच्छिम नहिं खांचें ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
सां	—	ध	पम॑	ध	प	म	—	म	मग	प	प
अ	—	द्‌भु	त–	न	ट	भे	—	ख	ध–	—	रे
म	म	म	प	ध	प	म	—	रे	सा	रे	सा
ज	मु	ना	—	त	ट	स्या	—	म	सुं	द	र
सा	सा	सा	म	—	मग	प	प	ध	प	सां	रें
गु	न	नि	धा	—	न–	गि	रि	ब	र	ध	र
सां	नि	ध	प	ध	प	म	—	—	प	ध	प
रा	—	स	रं	—	ग	ना	—	—	चें	—	—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	प	प	सां	—	सां	सां	—	सां	रें	सां	—
जु	व	ति	जू	—	थ	सं	—	ग	मि	लि	—
सां	ध	ध	सां	—	रें	सां	—	सां	ध	नि	प
गा	—	व	त	—	के	दा	—	रो	रा	—	ग
सां	सां	गं	गं	मं	रें	सां	सां	सां	रें	सां	सां
अ	ध	र	बे	—	नु	म	घु	र	म	धु	र
सां	नि	ध	प	ध	प	म	—	—	प	ध	प
स	—	म	सु	र	न	साँ	—	—	चैं	—	—

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	प	प	ध	धनि	ध	प	—	म
उ	र	प	ति	र	प	ला	——	ग	डा	—	ट
प	प	ध	ध	सां	सां	नि	नि	ध	ध	प	प
त	त	थे	ई	त	त	थे	ई	थे	ई	थे	ई
म	म	प	प	ध	प	म	—	म	सा	रे	सा
उ	घ	ट	त	—	स	ब्दा	—	व	लि	ग	ति
सा	—	म	मग	र	प	ध	प	म	प	म	—
भे	—	द	को—	उ	न	बां	—	—	चैं	—	—

आभोग

×		०		२		०		३		४	
प	प	सां	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	—	सां
च	त्रु	भु	ज	प्र	भु	ब	न	बि	ला	—	स
सां	—	ध	—	सां	रें	सां	नि	ध	प	म	म
मो	—	हे	—	स	ब	सु	र	अ	का	—	स
प	सां	सां	मं	—	रें	सां	सां	रें	सां	—	सां
स	ध	न	चं	—	द	बि	थ	क्यों	र	—	थ
सां	नि	ध	प	ध	प	म	—	—	प	ध	प
प	—	च्छि	म	न	हिं	खां	—	—	चें	—	—

राग केदारो — ताल चौताल (ध्रुपद)

चलो क्यों न देखेंरी खरे दोऊ कुंजनकी परछांईं ।
एक भुजा गहि डार कदमकी, दुजी भुजा गल बांईं ॥१॥
छबिसों छबिली लपटि लटकि रही, कनकबेलि तरुतमाल अरुझांईं ।
'हरिदास'के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी, रंगे हें प्रेम रंगमांईं ॥२॥

स्थायी

											धप
											च—
३		४		×		०		२		०	
म	मग	प	धप	सां	—	ध	प	म	म	ध	प
लो	क्यों	—	न—	दे	—	—	खो	—	री	—	ख
म	रे	—	सा	सा	—	—	म	—	मग	प	—
रे	दा	—	उ	कुं	—	—	ज	—	न—	की	—

—	ध	सां	रें	सां	नि	ध	प	प	म	—	धप
—	प	—	र	छां	—	—	ई	—	—	—	च—

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
प	—	—	सां	—	सां	सां	—	—	सां	रें	सां
ए	—	—	क	—	सु	जा	—	—	ग	—	हि
सां	ध	—	सां	—	सां	रें	—	सां	नि	ध	प
डा	—	—	र	—	क	द	—	म	की	—	—
प	—	—	गं	मं	रे	सां	नि	ध	ध	सां	रें
ढु	—	—	जी	—	सु	जा	—	—	ग	—	ल
सां	नि	ध	प	प	म	—,	ध				
बां	—	—	ई	—	—	—,	च				

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	—	ध	प	म	मग	प	—
छ	वि	—	सों	—	—	छ	वि	—	ली—	—	—
प	प	—	ध	सां	सां	नि	ध	प	ध	प	म
ल	प	—	टि	—	ल	ट	—	कि	र	—	ही
प	प	—	ध	—	प	म	—	म	रे	—	सा
क	न	—	क	—	बे	ली	—	त	रु	—	त
सा	—	—	म	—	प	ध	प	म	रे	—	सा
मा	—	—	ल	—	अ	रु	—	—	झां	—	ई

राग केदार — ताल धमार

भली भई ब्रज होरी आई घर आये घनस्याम चोवाचंदन और
अरगजा वे राधाके काम ॥१॥
धन तेरो भाग, सुहाग लाडिली और न दूजी वाम ।
'कृष्ण जीवन' लछिराम के प्रभुसों ज्यों सीता मिलि राम ॥२॥

स्थायी

										ध	मग	प	प
										भ	ली-	—	भ
×					२		०			३			
सां	—	रें	सां	नि	ध	प	म	प	म	सा	रे	सा	—
इ	—	—	ब्र	ज	हो	—	री	—	—	आ	—	ई	—
सा	म	मग	प	निध	सां	रें	सांनि	ध	प	ध	मग	प	प
घ	र	आ-	ये	——	घ	न	स्या-	-	म	भ	ली-	—	भ

अन्तरा

×					२		०			३			
प	—	—	सां	—	—	—	सां	रें	—	सां	—	सां	—
चो	—	—	बा	—	—	—	चं	—	—	द	—	न	—
सां	नि	ध	सां	—	सां	रें	सां	सां	नि	ध	प	म	—
औ	—	—	—	—	अ	र	ग	जा	—	—	—	वे	—
मं	मं	गं	मं	रें	सां	रें	सांनि	ध	प	ध	मग	प	प
रा	—	—	धा	—	के	—	का—	-	म	भ	ली-	-	भ

राग काफी–संक्षिप्त विवरण

काफी थाट से उत्पन्न होने वाला यह राग सम्प्रदाय में अधिकतर होरी–खेल के दिनों में तथा हिंडोरा–झूला के दिनों में गाया जाता है। बधाई और कुछ त्यौहार के पद भी प्राप्त होते हैं। इस राग की जाति सम्पूर्ण है। स्वर गान्धार, निषाद कोमल, बाकी के सब शुद्ध लगते हैं। बादी पंचम और संवादी षड्ज है। अन्यमतानुसार गान्धार–निषाद का संवाद माना जाता है। समय मध्यरात्रि होते हुए भी प्रचार में सर्वकालीन माना जाता है। अतः सम्प्रदाय की प्रातः एवंम् सायं–सेवाप्रणाली में भी इस राग के पद गाये जाते हैं। इस राग के आरोह में तीव्र गान्धार और तीव्र निषाद अनेक बार लिये जाते हैं। ये स्वर नियमित नहीं हैं, किन्तु योग्य प्रमाण में उपयोग करने से अति वैचित्र्य दिखाई देता है। क्वचित् उचित स्थान पर कोमल धैवत का प्रयोग करने से भी रागहानि नहीं, किन्तु सौन्दर्यना मानी जाता हैं। राग की खूबी सा, ग, प, और नि स्वरो पर है।

पकडस्वर :– सासा, रेरे, ग ग, मम, प।

आरोहावरोह :– सारेग, म, प, धनिसां। सांनिध, प, मग, रेसा.

स्वरविस्तार :– संगीत सुबोधिनी ग्रन्थ में देखिये।

राग काफी – ताल धमार

ओरन सों खेलै धमार मोसों, मुख हू न बोले।
नंदमहरको लाडिलो मोसों, ऍंडो ही डोले ॥१॥

श्रीराधाजू, पनियाँ निकसी, वाको घूंघट खोले।
'सूरदास'प्रभु सांवरो, हियरा बिच डोले। ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
सा	—	—	रे	—	रे	—	ग	—	—	म	—	प	म
औ	—	—	र	—	न	—	सों	—	—	खे	—	—	—
नि	—	—	ध	—	नि	—	प	प	—	ग	—	म	—
लै	—	—	ध	—	मा	—	—	र	—	मों	—	सों	—
प	प	—	ध	—	प	—	ग	—	—	रे	—	ग	सा
मु	ख	—	हु	—	न	—	वो	—	—	लै	—	—	—

अन्तरा

×					२		०			३			
म	—	—	प	—	ध	—	नि	नि	—	सां	—	—	—
नं	—	—	द	—	म	—	ह	र	—	को	—	—	—
रें	—	—	गं	—	रें	—	सां	—	—	ध	—	प	ध
ला	—	—	—	—	डि	—	लो	—	—	मों	—	सों	—
सां	नि	—	ध	—	प	—	म	प	—	ग	रे	ग	—
ऐं	—	—	डो	—	ही	—	डो	—	—	लै	—	—	—

संचारी

×					२		०			३			
नि	—	—	सां	—	सां	—	सां	सां	—	ध	—	नि	प
रा	—	—	धा	—	जु	—	प	नि	—	यां	—	—	—

—	—	—	प	—	ध	प	म	प	—	ग	—	रे	—
—	—	—	नि	—	क	—	सी	—	—	हो	—	—	—
सा	—	—	रे	—	—	—	ग	—	—	म	—	प	म
बा	—	—	को	—	—	—	घूं	—	—	घ	—	ट	—
नि	—	—	ध	—	नि	—	प	—	—	—	—	—	—
खो	—	—	—	—	—	—	लै	—	—	—	—	—	—

राग काफी — ताल धमार

भरोरे न भरोरे लंगरवा, हाँ हाँ मोहि जिनि भरोरे लंगरवा ॥ध्रु०॥
सब सखियन मिलि केशर घोर्यो, भरि भरि लाई करवा।
भरि पिचकारी मेरे मुख पर डारि मेरी अंगियां भींजत बस करोरे
लंगरवा ॥१॥
बरजि रही बरज्या मानत्त, तोयों उरको हरवा।
उलटौ मोहन फगुवा मागै, व्है रह्यो होरी को भरुवा ॥२॥
सुनैगा नाहक नहिं लरैगो, और कुटुंब को डरवा।
'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे, लेहुँगी बलैया पांय परवा ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
निं	नि	—	सां	—	सां	रें	सां	नि	—	ध	—	प	प
भ	रो	—	रे	—	—	न	भ	रा	—	रे	—	न	—
प	प	—	प	—	ध	प	म	प	—	ग	—	रे	—
भ	रो	—	रे	—	—	लं	ग	र	—	वा	—	—	—

ग	सा	–	सा	–	रे	–	ग	रे	ग	म	–	म	–
–	–	–	हीँ	–	हीँ	–	मो	हे	–	जि	–	न	–
प	प	नि	ध	प	म	प	ग	रे	ग	सा	–	–	–
म	रो	–	रे	–	लं	–	ग	र	–	वा	–	–	–

अन्तरा

×					२		०			३			
प	प	–	रें	–	रें	–	रें	रें	–	गं	रें	गं	–
स	ब	–	स	–	खी	–	य	न	–	मि	–	लि	–
रें	–	–	सां	–	सां	–	रें	नि	–	सां	–	–	–
के	–	–	स	–	र	–	घो	–	–	यौं	–	–	–
नि	नि	–	नि	–	नि	–	ध	म	–	प	–	ध	–
भ	र	–	भ	–	र	–	ला	–	–	इ	–	–	–
नि	नि	–	सां	–	–	–	–	–	–	नि	–	सां	–
क	र	–	वा	–	–	–	–	–	–	–	–	–	–
ध	ध	–	ध	–	ध	–	ध	नि	–	प	–	ध	–
भ	र	–	पि	–	च	–	का	री	–	मे	–	रे	–
नि	नि	–	सां	–	सां	रें	नि	ध	नि	प	–	प	ध
मु	ख	–	प	–	र	–	डा	–	–	री	–	मे	री

नि नि – सां – | सां रें | सां नि – | ध – म –
अं गी – यां – | – भीं | ज त – | ब – स –
प प – नि – | ध प | म प म | ग – रे –
क रो – रे – | – लं | ग र – | वा – – –

"प्रत्येक तूक अन्तरानुसार"

राग काफी – ताल माला

होरि खेलें लाल डफ बाजै ताल, मानों झनन झनन ।
झूमर खेलनि निकसी नवल त्रिय, हाथी छूटै मानों धनन धनन ॥१॥
चोवा चंदन अगर कुमकुमा पिचकाई छूटै मानों सनन सनन ।
'नंददास' प्रभु मंडल मध्य निर्तत, लेत भाव मोहे मनन मनन ॥२॥

स्थायी–ताल–त्रिताल मात्रा–८

३ × २ ० ३ × २ ०
म गम | प – | ध प | – प | ग म | पध निसां | नि ध | प प
हो री– | खे – | लैं ला | – ल | ड फ | बा– –– | जे ता | – ल
ग म | प नि | ध प | रेग रे | म म |
मा नों | झ न | न झ | न– न | हो री |

अंतरा–ताल–चर्चरी (झपताल अंग)

× २ ० ३
प म | प – ध | नि – | सां – सां
झू – | म – र | खे – | ल – न

रें	$\underline{\text{गं}}$	रें	सां	सां	रें	$\underline{\text{नि}}$	ध	प	—
नि	क	सी	—	न	व	ल	त्रि	च	—
नि	—	सां	—	रें	$\underline{\text{नि}}$	ध	प	—	ध
हा	—	थी	—	छु	टे	—	मा	—	नां
ग	म	प	$\underline{\text{ध}}$	प	$\underline{\text{ग}}$	रे	म	प	म
ध	न	न	—	ध	न	न	हो	—	री

संचारी, ताल सूलताल

×		०		२		३		०	
नि	—	सां	—	$\underline{\text{नि}}$	—	ध	$\underline{\text{नि}}$	प	—
चो	—	वा	—	चं	—	द	—	न	—
प	—	ध	प	म	प	$\underline{\text{ग}}$	—	रे	—
ओ	—	र	अ	र	ग	जा	—	—	—
सा	सा	रे	गे	$\underline{\text{ग}}$	$\underline{\text{ग}}$	—	म	प	म
पि	च	का	ई	छु	टे	—	मा	—	नों
$\underline{\text{नि}}$	ध	प	म	प	प	$\underline{\text{ग}}$	रे	सा	—
स	न	—	न	—	स	न	न	हो	री

आभोग—ताल—चौताल

×		०		२		०		३		४	
म	—	—	प	—	ध	नि	—	सां	सां	—	सां
नं	—	—	द	—	दा	—	—	स	प्र	—	भु

रें	गं	गं	रें	—	सां	रें	नि	सां	सां	—	सां
मं	ड	ली	म	—	ध्य	नि	र	—	त	—	त
नि	—	—	सां	—	—	नि	—	ध	प	—	ध
ले	—	—	त	—	—	भा	—	व	मो	—	हे
सां	नि	ध	प	म	प	ग	रे	ग	म	—	म
म	न	—	न	—	म	न	—	न	हो	—	री

राग काफी—ताल त्रिताल

मन मोहना रंग हिंडोरना ।
चलरी सखी मिल देखन जैये, वृंदावन सुभ डौरना ॥१॥
मोर मुकुट मकराकृत कुंडल, पीतांबर झकझोरना ।
पुरुषोतम प्रभुकी छबी निरखत श्याम घटा घनघोरना ॥२॥

स्थायी

सां नि
म न

×		२	०	३	×	२	०	३	
धप	मप	म	रेरे	गम	मनि	धनि	धप	—प	प
मो-	—	ह	नारं	—ग	हिंडो	——	रना	—म	न

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	मप	धनि	–सां	सांरें	रेंगंरें	सांरें	निसां	–
च	लरी	सखी	–मि	लदे	–ख	नजै	–ये	–
नि	–सां	रेंनि	धग	मप	––	धपध	सांनिध	प
वृं	–दा	–व	नसु	भठो	––	रना-	––म	न

संचारी

×	२	०	३	×	२	०	३	
नि	–सां	सांनि	धप	पप	–ध	पम	पग	रे
मो	–र	मुकु	टम	करा	–कु	तकुं	–ड	ल
सा	–रे	–ग	गम	मनि	धनि	धप	––	–
पी	–तां	–ब	रझ	कझो	––	रना	––	–

आभोग

×	२	०	३	×	२	०	३	
म	मप	धनि	निसां	सांरें	गंरें	सांरें	निसां	सां
पु	रुषो	–त्त	मप्र	भुकी	–छ	बीनि	रख	त
नि	–सां	रेंनि	धग	मप	––	धसां	निध	प
स्या	–म	घटा	–घ	नघो	––	रना	–मा	न

राग काफी–ताल त्रिताल (मात्रा ८)

ऐरी सखी झूलत नवलकिसोर, संग लिये नवनागरी रंग ।
स्रावन मास हिंडोरना ॥१॥
ऐरी सखी देखन सब मिल जाय, चले हे जुथ मिली आगरी रंग ।
श्रावन मास हिंडोरना ॥२॥

स्थायी

						प	मप	ध
						ए	रीस	खी
×	२	०	३	×	२	०	३	
नि	निसां	सांनि	धप	मग	मनि	धनिप	——	—
झू	—ल	तन	वल	किसा	——	——र	——	—
म	मग	रेरे	गम	पनि	धप	मगरे	गरे	सा
सं	—ग	लिये	—न	वना	——	गरी—	—रं	ग
सा	—रे	रेग	—म	पनि	धनि	धप	——	—
स्रा	—व	नमा	—स	हिंडो	——	रना	——	—

अन्तरा

						रें	रेंसांरें	ग
						ए	—री—	—
×	२	०	३	×	२	०	३	
रें	—सां	सांरें	निध	मनि	धनि	धप	——	—
दे	—ख	नस	बमि	लजा	——	—य	——	—

नि	निसां	सांनि	निध	पम	गप	मग	—रे	सा
च	लिहे	जू—	थमि	लिआ	——	गरी	—रं	ग
सा	—रे	रेग	रेम	मप	मनि	धप	——	—
स्त्रा	—व	नमा	—स	हिंडो	——	रना	——	—

राग काफी—ताल चौताल

हो हो हो होरी खेले लाल संग ग्वाल इक दिस लीने राधा नवसत
साजें बाल ।
सुर बीना सुरमंडल डफ अमृतकुंडली आवज अध्वट उपंग चंग बाजे,
मृदंग ताल ॥१॥
सुमन कलस नव तमाल उडवत अबीर गुलाल दोरत गहि छतियां
लागि चुंवन दे करत ख्याल ।
× × × × आगे 'वसंत धमार' कीर्तन में देखियें ।

स्थायी

०		३		४		×		०		२	
म	नि	प	ग	रे	सारे	प	—	ध	ग	रे	रे
हो	हो	हो	हो	—	री—	खे	—	ले	ला	—	ल
रे	ग	सा	रे	ऩि	सा	रे	म	प	ध	नि	सां
सं	—	ग	ग्वा	—	ल	इ	क	दि	स	ली	ने
नि	ध	म	प	ग	रे	प	ग	ग	रे	ऩि	सा
रा	धा	न	व	स	त	सा	—	जें	बा	—	ल

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	प	ध	नि	सां	नि	सां	—	सां
सु	र	बी	ना	सु	र	मं	ड	ल	ड	—	फ
नि	सां	रें	गं	रें	सां	नि	सां	सां	सांनि	धप	ध
अ	मृ	त	कुं	ड	ली	आ	व	ज	अ—	——	ध
सां	नि	—	ध	म	पध	ग	—	रे	नि	सा	सा
व	ट	—	उ	पं	ग—	चं	—	ग	वा	—	जे
रे	म	प	ध	नि	सां	म	नि	प	ग	रे	रे
मृ	दं	ग	ता	—	ल	हो	हो	हो	हो	—	री

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	प	ध	नि	ध	नि	ध	प	प
सु	म	न	कु	ल	स	न	व	त	मा	—	ल
ध	म	प	प	—	ध	नि	सां	नि	ध	—	प
उ	ड	व	त	—	अ	बी	र	गु	ला	—	ल
नि	नि	नि	सां	—	रें	नि	ध	प	ग	—	रे
दो	र	त	ग	—	हि	छ	ति	यां	ला	—	गि

सा	रे	रे	ग	म	प	ग	रे	ग	म	प	प
चुं	ब	न	दे	—	क	र	त	—	ख्या	—	ल

राग, जयजयवन्ती—संक्षिप्त परिचय

जयजयवन्ती राग भी प्राचीन है। कोई इसे 'जयावंती' अथवा 'बैजयन्ती' भी कहते हैं। यह राग खमाज थाट से उत्पन्न होता है। आरोह में ग और नि शुद्ध है और अवरोह में नि ग कोमल लिये जाते है तथापि अवरोह में शुद्ध गान्धार भी लिया जाता है। कोमल गान्धार अवरोह में लिया जाता है, फिर भी वे दोनों ऋषभ के बीच में जकड़ा हुआ रहता है। प्रचार में इसको सोरठ अंग का राग माना जाता है। मन्द्र पंचम से ऋषम की संगति आकर्षक होती है। सोरठ राग से दूर रखने के लिये खास ध्यान रखना चाहिए। ऋषभ स्वर पर विशिष्ट प्रकार का आघात किया जाता हैं। इस राग को परमेल—प्रवेशक नाम से भी पहचानते हैं। इस रास के पश्चात् काफी थाट के राग गाने का व्यवहार होने से पण्डितों ने दूसरे थाट में प्रवेश करानेवाला होने से परमेल—प्रवेशक राग कहा है, क्योंकि इस राग में कोमल निषाद और कोमल गान्धार का प्रयोग काफी थाट की ओर ले जाता है।

अष्टछापपरम्परा में यह राग विशेषतः चतुर्मास में गाया जाता है। सावन में हिंडोला के, भादों में जन्माष्टमी के तथा आश्विन में रास के पद सुप्रसिद्ध हैं। हवेलीपरम्परा में मध्यएवं तार सप्तक ओर विशेष झुकाव रहता है।

प्रचार में गानसमय रात्रिका दूसरा प्रहर हैं। वादी ऋषभ और दोनों निषादों का प्रयोग होता है। यह लोकप्रिय राग है।

आरोहावरोह : सा, रे, रे ग रे सा, नि ध प, रे, गमप, निसां।

सांनिधप, धम, रे ग रे सा ।

पकड : रे ग रे सा, नि ध प, रे,

स्वरविस्तार :

(१) सा, रेसा, रे ग रे सा, रेगम, रे ग रे सा, निसारेगमप,मग, रेगरेसा.

(२) म, गम, रेगम, पम, धपम, रेमप, नि, धपध, ग, म, सांनिधपम, रे निधप धग, म, रे ग रेसा.

(३) ध, नि ध, सांनिध, रेंसारेंनिध, रेंगंरेंसां, निसांरेंगंमं, रेंगंरें, निसां, धनिसां, निधप, मप, सां.

(४) मपसां, निसां, निधनिसां, रेंगंरेंसां, निसां, रेंगं, गंमं, रेंगंरें, निसां, निसारें सां,

राग जयजयवन्ती—ताल चौताल

माई फूलको हिंडोरो बन्यो, फूल रही जमुना ।
फूलनके खंभ दोऊ फूलनकी दांडी चार, फूलनकी चोकी बनी हीरा झगमगना ॥१॥
फूले अति बंसीबट फूलहें जमुनातट, सब सखी मिलि गावें मधुर मृदु बोलना ।
फूली सखी चहुं ओरें झुलवत थोरें थोरें, नंददास फूले गावें रीझि प्रेममगना॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	—	सां	सां	निध	पध	नि	सां	सां	रें	सां	—
फू	ऽ	ल	को	ऽऽ	हिंऽ	डो	ऽ	रो	ब	न्यो	ऽ
नि	ध	म	प	ध	रें	सां	निध	मग	रेग	रेसा	ऩिसा
फू	ऽ	ल	र	ऽ	ही	ज	मुऽ	नाऽ	ऽऽ	माऽ	ईऽ

रे	—	रे	रे	म	प	नि	—	सां	रें	सां	—
फू	ऽ	ल	को	ऽ	हिं	डो	ऽ	रो	ब	न्यो	ऽ

अंतरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	म	प	—	नि	सां	—	नि	सां	—	सां
फू	ऽ	ल	न	ऽ	के	खं	ऽ	भ	दो	ऽ	ऊ
नि	—	सां	रें	—	सां	नि	सां	सां	नि	ध	प
फू	ऽ	ल	न	ऽ	की	दां	ऽ	डा	चा	ऽ	र
गं	—	गं	गं	मं	मं	रें	—	गं	रे	सां	—
फू	ऽ	ल	न	ऽ	की	चो	ऽ	की	ब	नी	—
रें	नि	ध	म	प	सां	नि	धप	म	गम	प	ध
ही	—	रा	ऽ	झ	ग	म	गऽ	ना	ऽऽ	मा	ई

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	म	प	—	ध	नि	—	सां	नि	सां	सां
फू	ले	ऽ	अ	ऽ	ति	बं	ऽ	सी	ब	ऽ	ट
नि	ध	नि	रें	—	सां	नि	सां	—	नि	ध	प
फू	ल	ऽ	हें	ऽ	ज	मु	ना	ऽ	त	ऽ	ट
म	ग	म	प	प	ध	नि	नि	सां	सां	—	सां
स	ब	ऽ	स	खी	ऽ	मि	लि	ऽ	गा	ऽ	वें

सां	नि	ध	प	ग	म	रे	ग	रे	सा	नि़	सा
म	धु	र	मृ	ऽ	दु	बो	ऽ	ल	ना	मा	ई

राग जयजयवन्ती—ताल चौताल

झूलत नवललाल झुलावत ब्रजलाल कालिंदीके तीर माई रच्यो है हिंडोरना (माई)।
तेसोई बोलत मोर क्रिडा करे चहुँ और तेसोई मयूरध्वनि लाग्यो घनघोरना ॥१॥
तेसोई फूलत फूल हरत मनके सूल अलिंगन गुजे भाई मनके सलोलना ।
'नंददास' प्रभु प्यारी जोरी अदभुत भारी देखवोई कीजै जेसे चंद्रको चकोरना॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
रे	—	रे	गरे	ग	प	म	—	ग	रे	ग	रेसा
झू	—	ल	त—	—	न	व	—	ल	ला	—	ल—
नि़	सा	—	रे	ग	रे	सा	सा	रे	नि	ध़	प
झु	ला	—	व	—	त	ब्र	ज	—	बा	—	ल
म	—	रे	म	प	प	नि	—	नि	सां	—	सां
का	—	लिं	दी	—	के	ती	—	र	मा	—	ई
सां	नि	नि	धप	ध	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
र	—	च्यो	हे—	—	हिं	डो	—	र	ना—	मा	ई

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
मं	म	प	नि	—	नि	सां	सां	नि	सां	—	सां
ते	सो	—	ई	—	बो	ल	त	—	मो	—	र

नि	नि	सां	रें	गं	रेंसां	नि	सां	रेंनि	ध	प	प
क्री	डा	—	क	—	रे—	च	—	हुँ—	ओ	—	र
म	रे	—	म	—	प	नि	सां	नि	सां	—	सां
ते	सो	—	ई	—	म	यू	—	र	ध्व	—	नि
सां	नि	नि	धप	ध	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
ला	—	ग्यो	घ—	—	न	घो	—	र	ना—	मा	ई

संचारी

×		०		२		०		३		४	
रे	रे	—	रे	—	प	म	ग	म	रे	ग	रे
ते	सो	—	ई	—	फू	ल	त	—	फू	—	ल
नि़	नि़	सा	रे	ग	रेसा	सा	सा	रे	नि़	ध़	प़
ह	र	—	त	—	म—	न	के	—	सू	—	ल
प	रे	—	रे	म	म	प	—	ध	म	—	प
अ	लि	—	ग	—	न	गुं	—	जे	मा	—	ई
नि	नि	धप	ध	म	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
म	न	——	के	—	स	लो	—	ल	ना—	—	—

आभोग

×		२		०		०		३		४	
म	—	प	नि	—	नि	सां	सां	—	सां	—	सां
नं	—	द	दा	—	स	प्र	भु	—	प्या	—	री

नि	सां	रें	गं	रें	सां	सां	सां	रें	नि	ध	प
जो	–	री	–	अ	द	भु	त	–	भा	–	री
म	–	रे	म	–	प	नि	सां	नि	सां	–	सां
दे	–	ख	वो	–	ई	की	–	जे	जे	–	से
निसां	रें	सां	नि	ध	म	प	ध	म	गरे	ग	सा
चं–	–	द्र	को	–	च	को	–	र	ना–	मा	ई

राग जयजयन्ती—ताल त्रिताल

माई आज तो गोकुल गाम केसो रह्यो फूलिकै ।
गृह फूले दीसे अति संपति समूलके ॥१॥ × × × × × × ×
फुले हें भंडार सब, द्वार दिये खोलिके ।
नंद दान देत फूले, 'नंददास' बोलिके ॥२॥

स्थायी

×	२	०	३	×	२	०	३	
सां	–नि	धंम	प–	निसां	निसां	––	निध	नि
आ	–ज	––	तों–	गोकु	–ल	––	गा–	म
रें	–रें	गंरें	सांसां	रेंसां	निध	पमग	मप	ध
के	–सों	––	रह्यो	–फू	––	लिके–	–मा	ई

अन्तरा

×	२	०	३	×	२	०	३	
ग	मध	——	नि—	निसां	—सां	——	रेंगं	रें
गृ	—ह	——	फू—	लेदी	—से	——	अति	—
सां	—नि	ध—	नि—	रेंसां	निध	पमग	मप	ध
सं	—प	——	ति—	समू	——	हके—	—मा	ई

आगेके सभी आवर्तन स्थायी—अन्तरानुसार।

राग कान्हरा—संक्षिप्त विवरण

कान्हारा को 'कानडा' भी कहते हैं। यह प्राचीन एवं ग्रन्थोक्त राग है। कान्हरा के विविध प्रकार हैं, किन्तु केवल कान्हरा राग का पुष्टि सम्प्रदाय के मन्दिरों में शयन—समय गाये जाने वाले रागों में अधिक प्रचार है। इस कान्हरा का अंग बागेश्री मिलानेसे बागेश्रीं कानडा होता है। पंचम वर्ज्य करने से केवल 'बागेश्री' होता है। इस प्रकार उनके विविध अंगों से कान्हरे के ३० प्रकार प्रचार में हैं। अन्य किसी भी राग के इतने प्रकार प्राप्त नहीं होते हैं, अतः कहा जाता है कि

"रागों को पति कानरो, धरती को पति इन्द्र,
तारेन को पति चन्द्रमा, गोपीपति गोविंद"

श्रीकृष्णका नाम कान्ह और कान्हर भी है, अतः यह राग प्रियाजी को अति प्रिय है। और श्रीकृष्ण को यह राग प्रियाजीके कंठसे ही सुनना प्रिय होता है। श्रीकृष्णदासजी के निम्न पद में यही दर्शन होते हैं।

* "राग कान्हरो तुमही पें सुनियत, श्रीवृषभाननंदिनी राधे
तान तरंग अनंग गति उपजति, कहा कहों रस सिंधु अगाध।"

कान्हरा के प्रकारोंमे नायकी, अडाना, सिंधूरा, सुघराई, सूहा, रायसा और बागेश्री कान्हरा सम्प्रदाय में गाये जाते हैं। कान्हरे का थाट काफी होने से आसावरी थाट में उत्पन्न होने वाले कान्हरे के प्रकार अष्टछापपरम्परा की प्राचीन पद्धतिमे नहीं है।

थाट काफी है। वादी ऋषभ और संवादी पंचम है। जाति सम्पूर्ण है। आरोह में शुद्ध निषाद का भी प्रयोग होता है। आरोह में गान्धार और अबरोह में धैवत स्वर वक्र रहता है। निप की स्वर संगति और गान्धार आन्दोलित है।

आरोहवरोह :— सारे, गमरेसा, मप, निप, निध, निसां।
सां, निध निप, म, प, गमरेसा.

स्वर विस्तार :—सा, रेसा, गरेसा, रेगमरेसा, पग मरेसा.
निसारे, पगगरे, सा, धनिध, निसां, निधप, नि,
धप, ग, रेसा, गमरेसा.
सां, निसां, रेंसा, गं गं रेंसा, मनिध, निसां,
निसांरेसा, नि, धप, मप, ग, मरे, सा.

राग कान्हरा—ताल चौताल

बन्या मोरमुकुट नटवर वपु स्यामसुंदर
कमलनयन बांकी भौंह ललितभाल घूंघरवारी अलकें।
पीत वसन मोतीमाल हिये पदक कंठ लाल,
हसनि बोलनि गावनि गंडनि स्रबनकुंडल झलकें ॥१॥

---

* स्वरलिपि के सहित यह पद "संगीतसुबोधिनी" ग्रन्थमें देखिये।

कर पद भूखन अनूप कोटि मदनमोहन रूप,
अदभुत बदनचंद देखि गोपी भूली पलकें ।
कहि 'भगवान हित रामराय'प्रभु ठाडे रासमंडल
मधि राधासों बांह जोरी किये हिये प्रेम ललकें ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
नि	ध	प	प	प	प	म	म	प	प	नि	प
मो	ऽ	र	मु	कु	ट	न	ट	व	र	व	पु
ग	—	म	रे	रे	सां	म	म	म	प	प	ध
स्या	ऽ	म	सुं	द	र	क	म	ल	न	य	न
नि	ध	नि	सां	—	सां	रें	रेंगं	रें	सां	—	सां
वां	ऽ	की	भौं	ऽ	ह	ल	लिऽ	त	भा	ऽ	ल
रें	सां	सां	निध	प	ध	नि	धप	ग	म	रेग	सारे
घूं	घ	र	वाऽ	ऽ	री	अ	लऽ	कैं	ऽ	बऽ	न्योऽ

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	—	प	प	ध	निध	नि	—	सां	सां	—	सां
पी	ऽ	त	व	स	नऽ	मो	ऽ	ती	मा	ऽ	ल
नि	सां	—	रें	रें	सां	नि	—	सां	ध	निध	प
हि	ये	ऽ	प	द	क	कं	ऽ	ठ	ला	ऽऽ	ल

म	प	नि	सां	रें	रे	गं	मं	रें	रें	रें	सां
ह	स	नि	बो	ल	नि	गा	व	नि	गं	ड	नि
रें	सां	नि	ध	प	ध	नि	धप	ग	म	रे	सारे
श्र	व	न	कुं	ड	ल	झ	लऽ	कैं	ऽ	ब	न्योऽ

संचारी

×		०		२		०		३		४	
प	प	म	ध	ध	—	नि	ध	नि	प	—	प
क	र	प	द	भू	ऽ	ख	न	अ	नू	ऽ	प
नि	सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	सां	ध	नि	प
को	ऽ	टि	म	द	न	मो	ह	न	रू	ऽ	प
म	म	म	प	नि	प	ग	—	म	रे	—	सा
अ	द्भु	त	ब	द	न	चं	ऽ	द	दे	ऽ	खि
नि़	सा	रे	रे	प	प	ग	ग	म	रे	—	सा
गो	ऽ	पी	भू	ऽ	ली	प	ल	ऽ	कैं	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल चौताल

आज धनि भाग हमारे, प्रगटे श्रीविट्ठलनाथ ।
दरसत मात्र ताप तनके गये, भवसागरतें तारे ॥१॥
सामल अंग बदन पूरन चंद, देखियत जग उजियारे ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीबिट्ठल, वल्लभराज—ललारे ॥२॥

स्थायी

								ग	गम	रे	सा
								आ	जऽ	ध	न
×		०		२		०		३		४	
रे	—	—	सा	रे	सारे	ग	—	म	रे	—	सा
भा	ऽ	ऽ	ग	ऽ	हऽ	मा	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
म	म	—	प	—	ध	सां	—	—	गं	रें	सां
प्र	ग	ऽ	टे	ऽ	श्री	बि	ऽ	ऽ	ठ्ठ	ऽ	ल
सां	नि	ध	ग	रे	सा	—	ग	ग	म	रे	सा
ना	ऽ	ऽ	थ	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	ऽ	ध	न

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	ध	नि	ध	सां	—	—	सां	—	—
द	र	ऽ	स	ऽ	त	मा	ऽ	ऽ	त्र	ऽ	ऽ
नि	—	सां	रें	—	सां	नि	सां	—	सां	नि	ध
ता	—	प	त	ऽ	न	के	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ये
प	प	—	म	ध	निध	सां	सां	—	ध	प	ध
भ	व	ऽ	सा	ऽ	ऽऽ	ग	र	ऽ	तें	ऽ	ऽ

सां	नि	ध	ग	रे	सा	—	ग	ग	म	रे	सा
ता	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	आ	ज	ऽ	ध	न

संचारी

×		०		२		०		३		४	
ध	—	—	ध	—	ध	नि	ध	नि	प	—	—
सां	ऽ	ऽ	व	ऽ	ल	अं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ऽ
प	ध	—	नि	सां	सां	नि	सां	—	ध	नि	ध
ब	द	ऽ	न	ऽ	पू	र	न	ऽ	चं	ऽ	द
म	—	म	ध	नि	प	ग	ग	म	रे	—	रे
दे	ऽ	खि	य	ऽ	त	ज	ग	ऽ	उ	ऽ	जि
ग	—	—	रे	—	—	नि	ध	नि	सां	—	—
या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल सलताल

कापर ढोटा नेन नचावत, हैं कोउ तेरे बाबाकी चेरी ।
हों दधि बेचन जाति मधुपुरी, आय अचानक बनमें घेरी ॥१॥
सेननि में सब सखा बुलाये, बात ही बात समस्या फेरी ।
जाइ पुकारुंगी नंदजुके आगे, जो कोउ छुवहिं मटुकिया मेरी ॥२॥
गोकुल बसि तुम डीठ भये हो, बहुते कानि करत हों तेरी ।
'परमानंद'प्रभु रसिक मुकुटमनि, बलि बलि जाऊँ स्यामघन केरी ॥३॥

स्थायी

×		०		२		३		०	
नि	—	सां	सां	नि	—	ध	—	प	ध
का	ऽ	प	र	ढो	ऽ	टा	ऽ	ऽ	ऽ
नि	नि	ध	प	ग	—	रे	—	सा	—
ने	ऽ	न	न	चा	ऽ	व	ऽ	त	ऽ
म	—	म	म	प	ध	नि	—	ध	प
को	ऽ	उ	ति	हा	ऽ	रे	ऽ	बा	ऽ
ग	म	रे	सा	रे	सा	नि़	ध़	नि़	सा
बा	ऽ	की	ऽ	चे	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ

अन्तरा

×		०		२		३		०	
नि	ध	नि	नि	सां	—	—	सां	—	सां
गो	ऽ	र	स	बे	ऽ	ऽ	च	ऽ	न
नि	सां	रें	सां	नि	सां	नि	ध	नि	प
जा	ऽ	त	म	धु	ऽ	ऽ	पु	री	ऽ
ध	—	म	म	प	ध	नि	सां	—	—
आ	ऽ	य	अ	चा	ऽ	न	क	ऽ	ऽ

नि̲	नि̲	ध	प	ग̲	म	रे	—	सा	—
ब	न	में	ऽ	घे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

संचारी

×		०		२		३		०	
सां	—	सां	सां	नि̲	—	ध	ध	—	—
से	ऽ	न	नि	दे	ऽ	स	ब	ऽ	ऽ
प	ध	नि̲	नि̲	ध	—	प	—	—	—
ख	खा	ऽ	बु	ला	ऽ	ये	ऽ	ऽ	ऽ
म	—	म	म	प	ध	नि̲	—	ध	प
बा	ऽ	त	हि	बा	ऽ	ऽ	ऽ	त	स
ग̲	—	सा	रे	ग̲	म	रे	ऽ	सा	ऽ
म	ऽ	स्या	ऽ	फे	ऽ	री	ऽ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल धमार

यह धन धर्महीतें पायो ।
नीके राखि जसोदा मैया, नारायन ब्रज आयो ॥१॥
जा धनको मुनि जप तप खोजत, बेदहु पार न पायो ।
सो धन धर्यो क्षीरसागरमें, ब्रह्मा जाय जगायो ॥२॥
जा धनतें गोकुल सुख लहियत, सगरे काज संवारे ।
सो धन वारि वारि उर अंतर 'परमानंद' बिचारे ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
नि	–	–	–	–	सां	–	सां	नि	–	ध	–	प	–
ध	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	मैं	ऽ	ही	ऽ	ऽ	तैं	ऽ	ऽ	–
प	ध	–	नि	–	सां	–	सां	नि	–	ध	–	प	–
पा	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	य	ह	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ
–	–	–	म	–	म	–	पध	नि	–	ध	–	प	–
ऽ	ऽ	ऽ	ध	ऽ	मैं	ऽ	हीऽ	ऽ	ऽ	तैं	ऽ	ऽ	ऽ
ग	–	–	ग	–	म	–	रे	–	–	सा	–	–	–
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

अन्तरा

×					२		०			३			
म	–	–	ध	–	नि	ध	नि	सां	–	सां	–	सां	–
नी	ऽ	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ख	ऽ	ज	ऽ
नि	सां	–	रें	–	सां	रें	गं	–	–	रें	–	सां	–
सो	ऽ	ऽ	दा	–	ऽ	ऽ	मै	ऽ	ऽ	या	ऽ	ऽ	ऽ
सां	–	–	सां	–	–	–	नि	नि	–	ध	नि	प	–
ना	ऽ	ऽ	रा	–	ऽ	ऽ	य	न	ऽ	ब्र	ऽ	ज	ऽ

प	ध	–	नि	–	रें	–	सां	नि	–	ध	–	प	–
आ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	य	ह	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ

संचारी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	–	सां	–	–	नि	–	ध	–
जा	ऽ	ऽ	ध	ऽ	न	ऽ	को	ऽ	ऽ	मु	ऽ	नि	ऽ
प	ध	–	नि	–	सां	–	नि	–	–	ध	–	प	–
ज	प	ऽ	त	ऽ	प	ऽ	खो	ऽ	ऽ	ज	ऽ	त	ऽ
म	–	–	म	–	म	–	पध	नि	–	ध	–	प	–
वे	ऽ	ऽ	द	ऽ	हु	ऽ	पाऽ	ऽ	ऽ	र	ऽ	न	ऽ
ग	–	–	–	–	म	–	रे	–	ऽ	सा	–	–	–
पा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	यो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा–ताल धमार

श्रीगोकुल जुग जुग राज करो ।
यह सुख भजनप्रताप तेजतें, छिन इत उत न टरो ॥१॥
पावन रूप दिखाय महाप्रभु पतितन पाप हरो ।
विश्वविदित दीनी मति प्रेतन, क्यों न जगत उद्धरो ॥२॥
श्रीवल्लभकुलकमल बिराजत, जस मकरंद भरो ।
'नंददास'प्रभु खटगुनसंपन्न, श्रीविट्ठलेस वरो ॥३॥

स्थायी

×					२		०			३			
सां	सां	—	सां	—	सां	—	प	ध	—	नि	—	रें	—
जु	ग	ऽ	जु	ऽ	ग	ऽ	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	क	ऽ
सां	—	—	नि	—	प	—	म	प	—	नि	प	ग	—
रो	ऽ	ऽ	श्री	—	ऽ	ऽ	गो	ऽ	ऽ	कु	ऽ	ल	ऽ
रे	सा	—	म	म	म	प	नि	प	—	म	प	ध	प
ऽ	ऽ	ऽ	जु	ग	जु	ग	रा	ऽ	ऽ	ज	ऽ	ऽ	क
ग	—	—	रे	—	सा	—	नि़	ध़	—	नि़	—	सा	—
रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	श्री	ऽ	गो	ऽ	ऽ	कु	ऽ	ल	ऽ

अन्तरा

×					२		०			३			
नि	ध	—	नि	—	नि	—	सां	सां	—	सां	—	सां	—
य	ह	ऽ	सु	ऽ	ख	ऽ	भ	ज	ऽ	न	ऽ	ग्र	ऽ

नि	सां	–	रें	–	रें	–	$\underline{\text{गं}}$	मं	–	रें	–	सां	–
ता	ऽ	ऽ	प	ऽ	ते	ऽ	ऽ	ज	ऽ	तैं	ऽ	ऽ	ऽ
$\underline{\text{नि}}$	$\underline{\text{नि}}$	–	ध	–	$\underline{\text{नि}}$	–	प	ध	–	$\underline{\text{नि}}$	–	रें	–
छि	न	ऽ	इ	ऽ	त	ऽ	उ	त	ऽ	न	ऽ	ट	ऽ
सां	–	–	$\underline{\text{नि}}$	–	प	–	म	प	–	$\underline{\text{नि}}$	प	$\underline{\text{ग}}$	–
रो	ऽ	ऽ	श्री	ऽ	ऽ	ऽ	गो	ऽ	ऽ	कु	ऽ	ल	ऽ

अन्तरा के बाद जुग जुग करो—स्थायीकी ३,४, पंक्ति अनुसार।

संचारी

×					२		०			३			
सां	–	–	सां	–	सां	–	नि	सां	–	$\underline{\text{नि}}$	ध	प	ध
पा	ऽ	ऽ	व	ऽ	न	ऽ	रू	ऽ	ऽ	प	ऽ	दि	ऽ
$\underline{\text{नि}}$	–	–	ध	–	$\underline{\text{नि}}$	–	प	–	–	प	–	प	–
खा	ऽ	ऽ	य	ऽ	म	ऽ	हा	ऽ	ऽ	ग्र	ऽ	सु	ऽ
म	म	–	म	–	प	–	$\underline{\text{नि़}}$	प	–	प	म	प	–
प	ति	ऽ	त	ऽ	न	ऽ	पा	ऽ	ऽ	प	ऽ	ह	ऽ
$\underline{\text{ग}}$	–	–	रे	–	सा	–	$\underline{\text{नि़}}$	ध़	–	नि़	–	सा	–
रो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ

राग कान्हरा—ताल त्रिताल

दूध पियो मनमोहन प्यारे ।
बलि बलि जाउ गहरु जिनि कीजें, कमलनयन अखियनके तारे ॥१॥
कनककटोरा भरि पीजें सुख दीजें, संग लेहु बलभद्र भैयारे ।
'परमानंद' मोहि गोधनकी सौं प्रातही उठत करो धैयारे ॥२॥

स्थायी

			ग म रे सा
			दू — ध पि
×	२	०	३
रे — — —	सा — म म	प ध पध नि	— ध — प
यो — — —	— — म न	मो — — —	— ह — न
ग — — —	म — रे —	नि सा — —	ग म रे सा
प्या — — —	— — — —	रे — — —	दू — ध पि

अन्तरा

		म	प नि ध नि
		ब	लि ब — लि
×	२	०	३
सां — — —	नि ध नि —	सां — — नि	सां रें रें रें
जा — — —	— — — —	उं — — ग	ह रु जि न
ग म रे सा	नि सा — —	नि ध म प	प ध नि सां
की — जें —	— — — —	क म ल न	य न अ खि

सां सां नि ध	पध नि ध प	गम रे सा —	ग म रे सा
य न के —	—— — ता —	रे— — — —	दू — ध पिं

संचारी

		ध	ध ध — ध
		क	न क — क
×	२	०	३
नि — प —	— — प ध	नि — सा —	— निध नि प
टो — रा —	— — भ र	पी — जे —	— सु— — ख
ध — प —	— म ध प	ग — — —	म — रे सा
दी — जे —	— सं ग ले	हो — — —	— — ब ल
नि सा रे प	ग — म —	रे — सा —	
म — द्र भै	या — — —	रे — — —	

आभोग

			नि ध नि —
			प र मा —
×	२	०	३
सां सां सां सां	नि सां रें रें	गं मं रें सां	नि नि ध म
नं द मो हि	गो — ध न	की - सौं —	उ ठ त ही
प — प ध	पध नि ध प	ग म रे सा	ग म रे सा
प्रा — त क	रौं— — धै —	या — रे —	दू — ध पि

राग कान्हरो—ताल त्रिताल

सोहत नासिका गिरिधर गजमोती ।
बोलत बीरा खात हंसत डोलत अरुन अधरकी दीनी पोती ॥१॥
कुंडल लोल कपोल बिराजत, जगमगात मुखमंडल जोती ।
'गोविंद' प्रभु को जु श्रीमुख निरखत, रसना कहा बरनौं मति बोती ॥२॥

स्थायी

नि़
सो

३				×				२				०			
सा	रे	सा	रे	ग	—	म	रे	रे	—	सा	—	नि़	ध़	सा	म
—	ह	—	त	ना	—	—	सि	का	—	—	—	—	—	—	गि
म	ध	—	ध	नि	नि	ध	प	मप	धप	ग	म	रे	—	सा	नि़
रि	ध	—	र	ग	ज	मो	—	——	——	ती	—	—	—	—	सों

अन्तरा

३				×				२				०			
नि	ध	नि	नि	सां	—	—	—	नि	ध	नि	—	सां	—	—	नि
बो	—	ल	त	बी	—	—	—	रा	—	खा	—	त	—	—	ह
सां	रें	सां	रें	गं	—	—	मं	रें	—	सां	—	नि	ध	म	म
स	त	—	डो	ल	—	—	—	त	—	अ	—	रु	न	—	अ
नि	ध	नि	—	सां	नि	ध	पध	नि	ध	मप	धप	ग	रे	सा,	नि
ध	र	की	—	दी	—	नी	——	पो	—	——	——	ती	—	—	सो

संचारी

३	×	२	०
– ध ध ध	नि प – म	प – – ध	नि – सां सां
– कुं ड ल	लो – – –	ल – – क	पो – ल बि
निध नि प प	– – म म	प ग – म	रे रे सा –
रा– – ज त	– – ज ग	म गा – त	– मु ख –
नि सा रे रे	ग – म –	रे – सा –	नि ध सा –
मं – ड ल	जो – – –	– – ता –	– – – –

राग—बागेश्री कान्हरा, ताल आडा चौताल (द्रुवताल)

नेन छबीले तरुन मदमाते ।
चंचल चपल भृकुटि छवि उपजत, आनि आनि मुसिकाते ॥१॥
भक्त कृपारस सदाइ प्रफुल्लित, मानहु कमलदल राते ।
'गोविंद' प्रभुको श्रीमुख निरखत, पान करत न अघाते ॥२॥

स्थायी

		सां	नि ध म निध
		ने	– न – छ–
×	२	३	४
सां –	नि – ध –	म – म म	प – ध प
बी –	– – ले –	– – त रु	न – म द
ग –	रे – सा –	– – – सां	नि ध म निध
मा –	– – ते –	– – – ने	– न – छ–

अन्तरा

×		२				३				४			
ग	म	नि	ध	नि	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	सां
चं	—	च	—	ल	—	च	—	प	—	ल	—	—	भृ
नि	सां	सां	—	रें	—	रें	—	गं	मं	रें	—	सां	—
कु	—	टि	—	छ	—	बि	—	उ	प	ज	—	त	—
नि	—	ध	—	म	ध	सां	—	नि	ध	म	प	ध	प
आ	—	न	—	आ	—	—	—	न	—	मु	—	सि	—
ग	म	रे	—	सा	—	—	—	—	सां	नि	ध	म	निध
का	—	—	—	ते	—	—	—	—	ने	—	न	—	छ—

संचारी

×		२				३				४			
सां	—	सां	—	—	सां	नि	—	—	—	ध	नि	ध	—
भ	—	क्त	—	—	कृ	पा	—	—	—	र	—	स	—
म	ध	नि	ध	सां	—	नि	ध	नि	प	प	—	प	—
स	दा	इ	—	प्र	—	फु	—	—	—	ल्लि	—	त	—
म	म	—	प	—	ध	प	म	ग	म	रे	—	सा	रे
मा	न	—	हु	—	—	क	म	ल	—	द	—	ल	—

ग	—	म	—	रे	—	सा	—	नि	—	ध	—	सा	—
रा	—	—	—	—	—	—	—	—	—	ते	—	—	—

आभोग

×		२				३				४			
ग	म	नि	ध	नि	—	सां	—	सां	—	सां	—	—	—
गो	—	विं	—	द	—	प्र	—	भु	—	को	—	—	—
नि	सां	सां	—	रें	—	रें	—	गं	मं	रें	—	सां	—
श्री	—	मु	—	ख	—	नि	—	र	—	ख	—	त	—
नि	—	ध	—	म	ध	सां	—	नि	ध	म	प	ध	प
पा	—	न	—	—	क	र	—	त	—	न	—	अ	—
ग	म	रे	—	सा	—	—	—	—	सां	नि	ध	म	निध
वा	—	—	—	ते	—	—	—	—	ने	—	न	—	छ—

राग नायकी—संक्षिप्त विवरण

राग नायकी कान्हरा का भी थाट काफी है। प्रचार में धैवत बर्ज्य माना जाता है, किन्तु अष्टछापपरम्परा में सम्पूर्ण जाति सुप्रसिद्ध है। हमारे मतानुसार षाडव प्रकारका 'नायकी' ध वर्ज्य और संपूर्ण जातिका "नायकी कान्हरा" कहा जायेगा। गान्धार और धैवत अधिकतर सारेग मरेसा सांध निप, निध निप, ध निप, इस प्रकार है। तथा ध, सां अथवा धनिसां, धनि प, ऐसा प्रयोग भी किया जाता है। रे प की

संगति से पंचमका महत्त्व है, अतः हमारी, मान्यतानुसार वादी स्वर पंचम और संवादी सा को मानना अधिक सुसंगत होगा । स्वर ग नि कोमल, बाकी के शुद्ध हैं । यह उत्तरांग प्रधान राग हैं, सारंगादि रागों के माफिक आरोह में नि शुद्ध लिया जाता है । गानसमय मध्यरात्रि का प्रचार में है, किन्तु मन्दिरो में संध्यारती के पश्चात् शयन और पौढवे की सेवा तक यह राग गाया जाता है ।

धैवत कोमल बाला प्रकार भी कोई मानते है, किन्तु वह प्रचार में नहिवत् है । कहा जाता है कि यह राग अलाउद्दीन खीलजी के समय में नायक गोपाल नामक कलावन्त की दैन है, किन्तु हमारे मतानुसार नायक बैजु के समकालीन गोपाल नायक होना वास्तविक होगा ।

आरोह :— सारे ग, म, रेसा, मप, निप, निसां.

अवरोह :— सां, निप, मप, ग, म, रेप, ग, म, रेसा.

पकड :— सां, रेप, ग, स, (पनि), धनि, प, मप, गमरे, सा.

राग नायकी कान्हरा ताल–अर्ध आडा चौताल

सुघर सहेली सब मिलि आवो गावो मंगल गीत ।
पुत्र भयो श्रीवल्लभ प्रभुके, जिन चाख्यो नवनीत ॥१॥
आँगन लींपो चोक पुरावो चीतो भींत पछीत ।
सोंधे कुमकुम उवट न्हवावो, पहिरावो पट पीत ॥२॥
पोस असित नोमीको सुभ दिन, सरस लग जहां सीत ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविट्ठल, बजत बधाइ जगजीत ॥३॥

स्थायी

३		४		१	२		३		४		१	२	
ग	गम	रे	सारे	प	—	प	—	—	नि	प	ग	म	रे
सु	घऽ	र	सऽ	हे	ऽ	ली	ऽ	ऽ	मि	ल	आ	ऽ	वो
सा	म	प	ध	सां	—	—	नि	ध	नि	प	ग	म	रेसा
ऽ	गा	वो	ऽ	मं	ऽ	ऽ	ग	ऽ	ल	ऽ	गी	ऽ	तऽ

अन्तरा

३		४		१	२		३		४		१	२	
नि	ध	नि	नि	सां	—	—	सां	—	सां	—	नि	प	—
पु	ऽ	त्र	भ	यो	ऽ	ऽ	श्री	ऽ	ऽ	ऽ	व	ऽ	ऽ
ध	सां	रें	—	गं	गं	मं	रें	सां	नि	ध	नि	प	—
ह्ल	ऽ	भ	ऽ	प्र	भु	ऽ	के	ऽ	ऽ	ऽ	प्र	भु	ऽ
म	प	नि	सां	रें	—	सां	नि	ध	प	ध	नि	धनि	प
जि	न	चा	ऽ	ख्यो	ऽ	ऽ	न	ऽ	व	ऽ	नी	ऽऽ	त

संचारी

३		४		१	२		३		४		१	२	
ध	—	ध	ध	ध	—	नि	प	—	—	—	नि	—	—
आं	ऽ	ग	न	लीं	ऽ	ऽ	पो	ऽ	ऽ	ऽ	चो	ऽ	ऽ

सां	—	—	रें	नि	सां	—	नि	—	ध	—	नि	प	—
क	ऽ	ऽ	पु	रा	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
म	—	प	ध	नि	प	—	ग	—	म	रेसा	रे	—	सा
ची	ऽ	तो	ऽ	भीं	ऽ	ऽ	त	ऽ	ऽ	पऽ	छी	ऽ	त

राग नायकी कान्हरा—ताल चर्चरी (झपताल अंग)

मेरो पिय रसियारी, सुनरी सखी तेरो दोस नहीं ।
नवल लालकों सबकोउ चाहत, कोन कोनके मन बसिया ॥१॥
एकनसों नेना जोरें एकनसों भौंह मरोरें, एकनसो मुख हँसिया ।
'कृष्णजीवन' लछीरामके प्रभु माइ, संग डोलत पुरनससियारी ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
प	प	ग	ग	म	रे	सा	ऩिसा	रे	सारे
पि	य	ऽ	र	सि	या	ऽ	ऽऽ	मे	रोऽ
म	म	प	—	ध	नि	ध	नि	सां	—
सु	न	री	ऽ	स	खी	ऽ	ते	रो	ऽ
नि	नि	प	म	प	ग	गम	रे	ऩिसा	रे
दो	ऽ	स	ऽ	न	हीं	ऽऽ	मे	ऽऽ	रो

अन्तरा

×		२			०		३		
म	प	निध	नि	नि	सां	सां	सां	—	—
न	व	लऽ	ऽ	ला	ऽ	ल	को	ऽ	ऽ
नि	सां	रें	—	रें	गं	मं	रें	सां	—
स	ब	को	ऽ	उ	चा	ऽ	ह	त	ऽ
नि	नि	धप	ध	म	प	प	ध	सां	—
को	ऽ	नऽ	ऽ	को	ऽ	न	के	ऽ	ऽ
सां	निध	नि	म	प	ग	म	रे	निसा	रे
म	नऽ	ब	ऽ	सि	या	ऽ	मे	ऽऽ	रो

संचारी

×		२			०		३		
म	म	म	प	—	नि	ध	नि	प	प
ए	क	न	सों	ऽ	ने	ना	जो	ऽ	रें
नि	नि	सां	सां	—	रें	सां	निध	नि	प
ए	क	न	सों	ऽ	औं	ह	मऽ	रो	रें
म	—	प	नि	प	ग	म	रे	सा	सा
ए	ऽ	क	ऽ	न	सौं	ऽ	मु	ऽ	ख

नि़	सा	रे	ऽ	प	ग	म	रे	निसा	रे
हँ	सि	या	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	री	ऽ	ऽ

राग नायकी कान्हरा—ताल चर्चरी (झपताल अंग)

लोचन लालची भये ।
रोके न रहत प्रेमके माते पलक कपाट दये ॥१॥
ले मन दूत पवन व्हे निकसे बहुयौं श्यामपें गये ।
"सूरके" प्रभु खरेइ सोदागर विनुग्रथ मोल लये ॥२॥

स्थायी

×		२			०		३		
सां	नि	ध	म	म	प	—	रेग	सा	रे
ला	ल	ची	—	भ	ये	—	लो—	च	न
प	प	ग	गम	रेसा	रे	—	नि़	सा	—
ला	ल	ची	——	भ—	ये	—	—	—	—

अन्तरा

×		२			०		३		
म	प	नि	प	नि	सां	सां	सां	—	—
रो	—	के	—	न	र	ह	त	—	—
नि	सां	रें	—	सांरें	गं	गंमं	रें	नि	सां
प्रे	—	म	—	के—	मा	——	ते	—	—

रें	नि	ध	म	म	प	—	निप	सां	सांरें
प	ल	क	—	क	पा	—	ट—	—	द—
नि	प	नि	म	प	ग	म	रेग	सा	रे
ये	—	—	—	—	—	—	लो—	च	न

संचारी

×		२			०		३		
नि	प	म	—	म	प	—	प	—	मप
ले	—	म	—	न	दू	—	त	—	प—
सां	सां	नि	—	प	म	प	ग	ग	म
व	न	व्हे	—	—	नि	क	से	—	ब
नि	प	ग	—	म	रे	—	नि	सा	—
हु	यों	स्या	—	म	पे	—	ग	ये	—

राग नायका (षाडव प्रकार)—ताल तीव्रा

ठाडे कुंजभवन ।
लटपटी पाग छुटी अलकावलि घूमत नयन सोहें अरुण बरन ॥१॥
कहा कहूं अंग अंगकी सोभा निरखत मन मुरझन ।
'गोविंद'प्रभुकी या छवि निरखत रतिपति भये हे सरन ॥२॥

स्थायी

२		३		×			२		३		×		
म	गम	रे	ग	नि	प	—	म	—	प	निप	ग	मरे	सा
ठा	——	डे	—	कुं	—	—	ज	—	—	भ—	व	——	न

अन्तरा

२		३		×			२		३		×		
म	प	नि	प	सां	—	सां	नि	सां	रें	रें	निसां	पनि	प
ल	ट	प	टी	पा	—	ग	छु	टी	अ	ल	का—	व—	ल
म	प	नि	सां	गं	—	मं	रें	रें	सांनि	सां	निनि	पम	प
घू	—	म	त	ने	—	न	सो	हैं	अरु	न	ब—	र—	न

संचारी

२		३		×			२		३		×		
म	—	प	—	नि	म	प	म	—	निप	मप	ग	मरे	सा
क	—	हा	—	क	हूं	—	अं	—	ग—	अं—	ग	की—	—
रे	प	ग	म	रेरे	रे	सा	नि	नि	पम	प	ग	मरे	सां
सो	—	भा	—	निर	ख	त	म	न	मु—	र	झ	——	न

राग अडाना—संक्षिप्त विवरण

अडाना राग के दो प्रकार प्रचार में है। अेक काफी थाट का और दूसरा आसावरी थाट का। काफी थाट का अडाना प्राचीन माना

जाता है। प्राचीन ग्रन्थों में केवल 'रागतरंगिनी' ग्रन्थ में अडाना का नामोल्लेख प्राप्त होता हैं।१ किन्तु उसका स्वरवर्णन प्राप्त नहीं होता है। अडाना के सम्बन्ध में प्रतापसिंहजी के कथन को भातखण्डेजी ने इस प्रकार उल्लेख किया है। "शास्त्र में तो ये सात सुरन से गाया है। निध पम गरे सा। याने सम्पूर्ण है। याको रात्रि के दूसरे प्रहर में गावनो।"

कुछ विद्वान लोग इस राग को 'रात का सारंग' भी कहते हैं। अष्टछाप—घराने की परम्परा में काफी थाट का अडाना ही प्राचीन माना जाता है। भातखण्डेजी के हि. सं. प. भा. ४ (शास्त्र), पृष्ठ ४२४ पर श्री टागोर के कथन का निम्न उल्लेख से इस बात की पुष्टि होती है। "आशावरी थाट का 'अडाणा' ही आधुनिक राग आहै। सुघराई, कानडा व सारंग ऐ तीन राग मिळून अडाणा उत्पन्न केला आहै।"

अष्टछाप परम्परा के काफी थाट के अडाने का समर्थन पण्डित आदितरामजीं ने भी निम्न प्रकार किया हैं :—

अडाणाख्यः पूर्णरागो मध्यमग्रहसंयुतः।
रागः प्रथमके यामे गीयते विषुधैर्जनै॥

"यह राग सम्पूर्ण है, मध्यम स्वरग्रह है, मेघ व कान्हरा संयुक्त रुप है। गान्धार व निषाद कोमल के साथ शुद्ध निषाद भी सामिल रहता हैं।" श्रीजयसुखलाल शाह ने "कान्हडा के प्रकार" ग्रन्थ में स्पष्ट कहा है कि "प्राचीन ग्रन्थों में ग, नि, कोमल बताकर इसका समावेश काफी थाट के अन्तर्गत किया गया है। जिससे ज्ञात होता हैं कि यह एक समय शुद्ध धैवत राग से गाया जाता था।

---

१ : हिंदोल सुघराई स्यादडानो रागसत्तमः।

वैष्णव मन्दिरों में गाये जानेवाले पदों में जो हवेलीसंगीत के नाम से प्रचलित हैं। आज कभी कभी शुद्ध 'ध' वाले अडाना के पद सुनने में आते हैं। ''

पण्डित भातखण्डेजीने क्रमिक भाग–४ में भी कहा है[1] कि वर्गी ही ग्रंथकार या रागान्त तीव्र धैवत मानून त्याचा थाट काफी मानतात। '' अडाना राग की उत्पत्ति के सम्बन्ध में कोई कानडा और मेघ, और कोई सुघराई, कानडा व सारंग के मिलाप से बना हुआ राग मानते हैं। इस मान्यता के आधार पर अडाना राग में धैवत शुद्ध होना स्पष्ट होता है, क्योंकि मिलाप के उपर्युक्त सभी रागों का थाट काफी है।

अडाना राग का दूसरा प्रचलित प्रकार आसावरी थाट का माना जाता हैं। इस प्रकार का रूप केवल आधुनिक ग्रन्थों में दिखाई देता है। पण्डित भातखंडेजी ने अडाना को आसावरी थाट में सम्मिलित किया हैं। इस राग के वर्णन में लिखा हैं कि कुछ गुनीजनो के मतानुसार षाडव–षाडव जाति भी मानी जाती है। अतः कुछ विद्वानो का मत है कि इस राग में धैवत वर्ज्य था, किन्तु बाद में इसका प्रयोग होने लगा।

अडाना राग का विवरण :–

१. यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। २. आरोह में ग ध दुर्बल हैं और इसका चलन ज्यादातर सारंग के अंग से ही किया जाता है। ३. परन्तु कहीं बार $\underline{\text{नि}}$ प $\underline{\text{ग}}$ म प सां इस तरह आरोह में गान्धार लिया जाता है और बीच में अवरोह में सां ध नि प इस तरह वक्र धैवत लिया जाता हैं। इस लिए इसकी जाति सम्पूर्ण मानना उचित है। ४. इस राग में ग नि कोमल और बाकी के स्वर

---

[1] : हि. सं. प. मराठी आवृत्ति भाग ४, पृष्ठ ६६२

शुद्ध हैं। ५. आरोह में शुद्ध निषाद लिया जाता है, किन्तु कई गुणीजनों के मतानुसार कोमल निषाद से कुछ ऊंचा और शुद्ध निषाद से कुछ नीचा प्रकार का स्वर लिया जाता है। ६. इस राग का चलन मध्य और तार सप्तकों में होता है। अतः यह राग उतरांगप्रधान माना जाता है। ७. वादी स्वर तार षड्ज और संवादी स्वर पंचम है। ८. इस राग का गानसमय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है, किन्तु कुछ गुणीजन दूसरा प्रहर भी मानते है। ९. पुष्टिसम्प्रदाय की प्रणाली में यह राग शयनसमय गाने की प्रथा है।

आरोहः—सा, रे म प, नि सां। **अवरोहः**—सां, ध नि̲ प, म प, ग̲ म, रे सा

पकड :—सां नि सां, ध नि प, म प सां।

राग अडाना — ताल चौताल

जलकों गई सुघट नेहभरि लाई परी हे चटपटी दरसकी।
इत मोहन गांस उत गुरुजन त्रास—चित्रलिखि ठाडी नाम धरत सखी परसकी ॥१॥
टूटे हार फाटे चीर नेनन बहत नीर, पनवट भई भीर सुधि न कलसकी।
'नंददास' प्रभुसों प्रीति बाढी अति गाढी, फैल परी चायन सरसकी ॥२॥

स्थायी

							नि̲	प	नि̲	म	प
							ज	ल	कों	ऽ	ग
×		०		२		०		३		४	
सां	—	—	नि̲	प	म	म	—	म	प	नि̲	प
ई	ऽ	ऽ	सु	घ	ट	ने	ऽ	ह	भ	ऽ	रि

ग	ग	म	रे	—	सा	रे	म	प	निध	नि	सां
ला	ऽ	ऽ	ई	प	री	हे	ऽ	च	ट—	प	टी
रें	रें	सां	निध	नि	प	मप	नि	प	नि	म	प
द	र	सऽ	की	ऽ	ज	ल	कों	ऽ	ऽ	ऽ	ग

अन्तरा

×		०		२		०		३		४	
म	प	—	प	निप	नि	सां	—	—	सां	सां	सां
इ	त	ऽ	मो	ह—	न	गां	ऽ	ऽ	स	उ	त
नि	सां	सां	रें	सां	ध	नि	प	म	प	नि	सां
गु	रु	ऽ	ज	प	त्रा	ऽ	स	चि	त्र	लि	खि
गं	गं	मं	रें	—	सां	म	प	निप	नि	सां	—
ठा	ऽ	ढी	ना	ऽ	म	ध	र	त	स	खी	ऽ
रे	सां	सांरे	सां	निध	नि	प	नि	प	नि	म	प
प	र	स—	की	ऽ	ऽ	ऽ	ज	ल	कों	ऽ	ग

संचारी

×		०		२		०		३		४	
म	म	—	प	—	प	ध	ध	नि	प	—	ध
टू	टे	ऽ	हा	ऽ	र	फा	टे	ऽ	ची	ऽ	र